शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालय का महत्व

प्रदीप कुमार
परिचर

१. परिचय -

शिक्षा के सर्वोन्मुखी विकास में पुस्तकालयों का महत्वपूर्ण योगदान है। गेराल्ड जानसन ने अपनी पुस्तक " पब्लिक लाइब्रेरी सार्विसेज " में लिखा है " विश्व के सर्वोत्तम विचारों को जानने का सबसे तेज और सरल माध्यम पुस्तकालय है " पुस्तकालय को अंग्रेजी भाषा में लाइब्रेरी कहा गया है। लाइब्रेरी शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के लाइबर (LIBER) शब्द से हुई है जिसका अर्थ है - पुस्तक। फ्रैंच भाषा में LIBRARAIRIE शब्द का अर्थ है किताबें बेचने की दुकान और LIBRAIRE का अर्थ है copyist, मध्यकालीन विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को पुस्तकें पुस्तकालय द्वारा उपलब्ध नहीं कराते थे लेकिन वे किताबें बेचने वालों और copyists को नियुक्त करते थे जो विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकतानुसार पुस्तकें और सन्दर्भ ग्रन्थ आदि किराये पर देते थे। अतः कालेजों में पुस्तकालयों की तरह की दुकाने किताबे बेचने वालों ने लगानी शुरू की। इस प्रकार कालेजों में पुस्तकालयों की आवश्यकता महसूस की जाने लगी।

२. शिक्षा और पुस्तकालय -

एक ठीक प्रकार से सुसज्जित और ठीक प्रकार से व्यवस्थित पुस्तकालय आधुनिक शिक्षा की नींव का ढांचा है। पुस्तकालय के बिना शिक्षा इस प्रकार है जैसे बिना आत्मा के शरीर, बिना इंजन के वाहन और सीमेंट के बिना ईटों का ढेर। शिक्षा और पुंस्तकालय सेवा एक -दूसरे के पूरक है जो एक दूसरे से अलग नहीं हो सकती। आज के लोकतांत्रिक भारत में शिक्षा की जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है हमारे देश में अभी अच्छी शिक्षा की अंतराष्ट्रीय स्तर पर देश को बहुत आवश्यकता है क्योंकि भारत एक विकासशील देश है।

आज का युग वैज्ञानिक युग है किसी भी देश की सरकार का कर्तव्य होता है कि वहाँ का प्रत्येक नागरिक शिक्षित हो जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास हो सके और वह राष्ट्र मजबूत बन सके। शिक्षा को प्राथमिक, माध्यमिक विश्वविद्यालय बुनियादी और सामाजिक भागों में बांटा गया है। प्रथम चार शिक्षा के स्तर (प्रामाणिक से बुनियादी) सीमित है जो विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के बंधन में रखकर नपी तुली शिक्षा देते हैं बुनियादी प्रणालियां उन लोगों को शिक्षा देती है जो शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन संस्थाओं में प्रवेश लेते हैं। और प्रतिदिन उस संस्था में अपनी उपस्थिति देते हैं। लेकिन हमारी समस्या उन अशिक्षित लोगों की है जो लाखों गाँवों में निवास करते हैं और शिक्षा पाने में असमर्थ हैं। उन्हें शिक्षित बनाना बहुत कठिन है। पुस्तकालय ही एक ऐसी संस्था है जो इन अशिक्षित लोगों को शिक्षा प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर सकती है। यूनस्कों का मत है कि " पुस्तकालय जन शिक्षा के वास्ते एक जागृत शक्ति है। आज निर्विवाद रूप से इस बात को माना जा चुका है कि पुस्तकालय जन शिक्षा, पुस्तकालय एवं जन चेतना के व्यापक प्रचार के अलावा प्रमुख और क्रियाशील माध्यम है। आज के युग में पुस्तकालय पुस्तकों का आदान-प्रदान ही नहीं करता , इसके अलावा जनता में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा को जन्म देता है "। हमारे संविधान की नीति में भी ठीक प्रकार से व्यवस्था कर शिक्षा के महत्व पर निश्चित रूप से हिदायत देकर 14 वर्ष की आयु तक के सभी नागरिकों के लिए शिक्षा अनिवार्य करने के कडे निर्देश होने

चाहिए । लोकतांत्रिक भारत में प्रत्येक नागरिक के लिए शिक्षा का अनिवार्य होना आवश्यक है । संयुक्त राष्ट्र के पूर्व राष्ट्रपति जेम्स मेडेसन ने ठीक ही कहा था --

" A Popular Government without popular information are the means of acquirising it but it is a prologue force or tragedy or perhapes both."

हमारे स्वर्गीय प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नंहरू ने पुस्तकालय के महत्व पर बल देकर कहा था कि -

" A ~~Litrary~~ Library is the key to the knowledge of the world."

३. पुस्तकालय के कार्य -

पुस्तकालय एक किताबों का बड़ा सा घर है । कालेज और विश्वविद्यालय के पुस्तकालय तो आज सोच विचार करने के आश्रय स्थल है जो पिछले २५ -३० वर्षो से उपयोग हो रहे हैं । आज के पुस्तकालय एक कार्यशाला की भॉति कार्य कर रहे है । जहाँ विद्यार्थी, शिक्षक और शोध कर्ता जाकर कई-कई घंटें खर्च करके किताबों,मैगजीनों, सन्दर्भ ग्रन्थों और अन्य प्रकार की अध्ययन सामग्रियों का उपयोग करते हैं । इस प्रकार कालेजों के पुस्तकालय तो ज्ञान तन्तु केन्द्र बन गये हैं । जिसकी प्रत्येक क्रिया कलाये संस्थान के सभी विभागों में एक धारा की भाँति प्रवाहित होती रहती है । अतः पुस्तकालय एक पहिये की धूरी की भाँति कार्य करता है । जिसके स्पोक्स की सभी विभागों में पहुँच है । किसी भी कालेज और विश्वविद्यालय के विकास और कार्य की वृद्धि में एक स्थायी और मजबूत पुस्तकालय का विशेष योगदान होता है ।

४. पुस्तकालय के उद्देश्य -

जिस प्रकार एक डैम दस लाख गैलन जल इकट्ठा करके सिंचाई के लिए प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकतानुसार वितरित करता है । उसी प्रकार एक पुस्तकायल ज्ञान के सभी क्षेत्रों की अध्ययन सामग्री को इकट्ठा करके प्रत्येक विद्यार्थियों,शिक्षकों और शोध कर्ताओं को उनकी आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराता है । विभिन्न परिस्थितियों में शिक्षण संस्थानों के पुस्तकालय सूचना विस्फोट और साहित्य विस्फोट का भविष्य में उपयोग के लिए सरल एवं सही इन्तजाम करते हैं । विश्वविद्यालय पुस्तकालय तंत्र ज्ञान की सभी शाखाओं विशेष तौर पर विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र के उचित साहित्य को उचित समय पर एकदम सही एवं शीघ्रता से शोध कर्ताओं को भली प्रकार से उपलब्ध कराता है ।

५. पुस्तकालय में पाठ्य सामग्री के प्रकार -

पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री कालेज,विश्वविद्यलाय और संस्थान के आकार, उद्देश्य,संसाधन और कार्यक्रम की मात्रा और विविधता पर निर्भर करती है । लेकिन ज्यादातर पुस्तकालयों में निम्न प्रकार की पाठ्य सामग्री उपलब्ध होती है ।

अ. सन्दर्भ पुस्तकें -

सामान्य और सन्दर्भ पुस्तकों के उस विषय पर महत्व दिया जाता है जो उस संस्थान के अध्ययन के क्षेत्र से संबंधित होती है । ये सन्दर्भ पुस्तके निम्न प्रकार की होती है -

1. Bibliographies
2. Dictionaries
3. Encyclopaedias
4. Hand books
5. Guides to literature
6. Histories
7. Biographical Informations
8. Directories and year books
9. Annual Review series
10. Periodicals
11. Indexing and Abstracting periodicals
12. Technical Reports
13. Proceedings of conferences, meetings and symposia
14. Specifications and standards
15. Patents, Standards and trade marks
16. Dissertations and Master Thesis
17. Maps, Charts, Atlases and Engineering Drawings.
18. Indexes and Thesaurus.

ब. अन्यत्र पुस्तकें -

वे पुस्तकें जो अन्य पाठ्यक्रमों जैसे इतिहास, शिक्षा शास्त्र, और विदेशी भाषाओं के पूरक केरूप में काम आती हैं और इस क्षेत्र विशेष से संबंधित हो जिसे पाठ्यक्रम में शामिल किया गया हो । वे सामान्य मुख्य पुस्तकें जो निश्चित विषय क्षेत्र से संबंधित न हो और महत्वपूर्ण पुस्तके जो कालेज के पाठ्यक्रम के विषय क्षेत्र से भी संबंधित न हो । वे पुस्तकें जो सामान्य ज्ञान और मनोरंजन से संबंधित हो।

स. पत्रिकाएं एवं समाचार पत्र -

पत्रिकाओं के नये अंक, अखबार और जिल्दबंद पत्रिकांए और माइक्रोफिल्म और माइक्रोकार्ड फोरम आदि ।

द. पैम्फलेट और कलिपिंग (कतरने) -

छोटे पैम्फलेट, छोटी पुस्तकों और अखबारों से नई सूचनाओं को विषय विशेष से संबंधित कतरनों को इकट्‌ठा करके फाइलों में रखना ।

य. सरकारी प्रकाशन - ISI कोड़ ISO कोड़, स्पेसीफिकेसन्स, केन्द्रीय सेवा नियमावलियां और स्वामी हैंडबुक आदि ।

र. ऑडियो-विजुअल-फिलम्, स्लाइड, ग्रामोफोन रिकोर्डस, टेप, फ्लोपी, और नक्शे ग्लोबस आदि।

६. पुस्तकालयध्यक्ष की भूमिका -

शिक्षक औपचारिक शिक्षा की सूचना प्रदान करने की भूमिका निभाता है । एक पुस्तकालयध्यक्ष स्वंय शिक्षा प्राप्त करने का आश्चर्यजनक कार्य जैसे कि बच्चे को बिना चम्मच के खाना खिलाने जैसा कार्य करता है । पुस्तकालयध्यक्ष का कार्य पाठकों के प्रति एक गाइड की भाँति है जो उन्हें उनसे संबंधित अध्ययन सामग्री कैसे और कहाँ उपस्थति है यह बताता है ।

पुस्तकालय व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें कुछ देकर या सेवा कर आनंद का अनुभव किया जाता है । कुछ लेकर नहीं । डा० रंगनाथन ने पुस्तकालयध्यक्ष के निम्नलिखित उद्देश्य बताये हैं ।

१. व्यक्तिगत लाभ या स्वार्थ । २. समाज कल्याण ।
३. सर्जनात्मक तथा विरेचनात्मक आनंद । ४. देशीय धर्म ।

पुस्तकालयों की व्यवस्था करने के लिए विशेष प्रकार की जनशक्ति की आवश्यकता है । इसका कारण यह है कि पुस्तकालयध्यक्षता का व्यवसाय अन्य व्यवसायों से अधिक कठिन है और भिन्न व्यवसाय है । अन्य अनेक व्यवसायों की कार्य क्षमता तथा निपुणता की जाँच केवल उन्हीं व्यवसायों से संबंधित लोग करते हें । उदाहरणार्थ जब कोई किसी विषय में व्याख्याता बनता है तो उस विषय से संबंधित छात्र या शिक्षक ही उसकी निपुणता जाँचते हैं । इतिहास के व्याख्याता की निपुणता इतिहास के क्षेत्र में ही जाँची जा सकती है । पदार्थ विज्ञान के क्षेत्र में नहीं । परन्तु जब कोई पुस्तकालयध्यक्ष बनता है तो उसकी निपुणता तथा कार्यक्षमता की जाँच प्रत्येक विषय से संबंधित पाठक करता है तथा प्रत्येक पाठक की कसौटी पर पुस्तकालयध्यक्ष को अपना अंहकार छोड़कर पाठकों की सेवा में लीन रहना चाहिए । पुस्तकालयध्यक्ष को बिना किसी पुरस्कार, प्रशंसा या लाभ की आशा किए, पाठकों की निष्काम सेवा करनी चाहिए ।

डॉ० रंगनाथन पूर्णतः भारतीय थे तथा भारतीय दर्शन और संस्कृति में उनका गहन विश्वास था उन्होंने सन्दर्भ पुस्तकालयध्क्ष में जिन सामान्य गुणों की चर्चा की है वे गुण प्रत्येक व्यक्ति तथ प्रत्येक कर्मचारी में होने चाहिए । पुस्तकालयध्यक्षों के गुणों की चर्चा करते हुए- वैलेस ने लिखा है -

It goes without saying that there is not a single desirable personality trait which would not be desirable in a librarian.

अतः यह कहा जा सकता है कि जितने भी मानवीय गुण है, किसी पुस्तकालयध्यक्ष में उन सभी का होना अपेक्षित है ; परन्तु निम्न लिखित गुण तो होने ही चाहिए संगठनात्मक क्षमता, पुस्तकों और पाठकों के प्रति प्रेम, सेवा भाव, मृदुभाषी और व्यावहारिक तथा प्रत्युक्पन्न मतित्वत्ता ।

निष्कर्ष -

पुस्तकालय और शिक्षा रेल की दो पटरियों के समान हैं जिन पर रेलगाड़ी दौड रही है । यदि पटरियां टूट जाये तो रेल का दौड़ना रूक जायेगा । इसी प्रकार यदि पुस्तकालय और शिक्षा के कार्य रूक जायें तो, राष्ट्र को हानि सहन करनी पड़ेगी । इसलिए हमें अपने दिल से राष्ट्र को आगे बढाने के लिए शिक्षा और ज्ञान

के क्षेत्र में वास्तविक रूप से सहयोग देना चाहिए । बहुत से स्कूल और पुस्तकालय सरकार द्वारा स्थापित किये जाये जो निरक्षरता को कम करने में एक बडी भूमिका अदा कर राष्ट्र को मजबूत बनाने में वास्तविक रूप से कार्य कर सकते हैं ।

सन्दर्भ -

१. शास्त्री, द्वारकाप्रसाद : पुस्तकालय विज्ञान परिचय ।

२. श्रीवास्तव, श्यामानाथ और शर्मा, सुभाषचन्द्र : पुस्तकालय संगठन एवं संचालन ।

३. डा० पाण्डेय, एस०के० शर्मा : पुस्तकालय और समाज ।

४. Ammini, V.K.: " The Importance of Libraries in Education: A perspective: Indian J. of Inf. Lib.& Society, V–11 (2) 1998.pp (45-50)

५. Mittal, R.L.: Library Administration; Theory and practice, Metropolitan book Co. Ltd., New Delhi, pp (13-15)

६. Saxena, R.S.: Academic and Special libraries; Their working, problems and solutions,Y.K. Publishers,Agra,pp(1-5)

***